1857 के विद्रोह के परिणाम

(i) ब्रिटिश नीति के दृष्टिकोण से-

राजनीतिक प्रभाव :-

• ब्रिटिश सरकार ने साम्राज्य विस्तार संबंधी नीति में परिवर्तन किया और यह घोषणा की कि भारत में साम्राज्य का विस्तार नहीं किया जाएगा।

• भारतीय शासकों को गोद लेने का अधिकार दिया गया तथा इनके साथ मित्रवत संबंधो को बनाए रखने पर भी बल दिया गया।

• जमींदारों को पहले से ही महत्व दिया जा रहा था और 1857 के विद्रोह के पश्चात महत्व को बनाए रखा गया।

प्रशासनिक रूप से :

• कम्पनी के शासन को समाप्त किया गया तथा भारतीय प्रजा के साथ भेदभाव न करने का आश्वासन दिया गया।

• उच्च पदों पर भारतीयों को भी बिना किसी भेदभाव का अवसर मिलेगा। 1861 के अधिनियम में गैर सरकारी सदस्य के रूप में विधायी परिषद में तीन भारतीयों को शामिल किया गया।

• 1870 एवं 1880 के दशक में स्थानीय संस्थाओं मे (नगरपालिका इत्यादि में) भारतीयों की भागीदारी को बढ़ाने पर बल दिया गया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

सैन्य क्षेत्र में:-

1 सैन्य क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए जैसे
- ब्रिटिश सैनिको की संख्या में वृद्धि। (बंगाल में दो भारतीयों पर एक अंग्रेज सैनिक तथा बाम्बे एवं मद्रास में तीन भारतीय पर एक अंग्रेज सैनिक)
- महत्वपूर्ण स्थानों पर अंग्रेजों की नियुक्ति की जाएगी। जैसे शस्त्र भण्डार एवं अन्य महत्वपूर्ण स्थान।
- सैन्य रेजिमेंट को विषम जातीय बनाने पर बल।
- सेना में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार को रोकने के लिए हरसंभव कोशिश की गई।

सामाजिक क्षेत्र में

- सरकार के द्वारा भारतीय समाज में सुधार को भी विद्रोह का एक कारण माना गया। विद्रोह के पश्चात सामाजिक सुधारों की उपेक्षा की गई।
- साथ ही भारतीयों को जाति और धर्म के नाम पर विभाजित रखने की योजना बनाई जाने लगी।
- शिक्षित भारतीयों को लेकर विशेष सावधानी बरती जाने लगी जैसे भारतीय शासकों और जमींदारों को शिक्षित भारतीयों के समानांतर भारत के स्वाभाविक नेता के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा।
- प्रेस पर सरकारी नियंत्रण को कठोर बनाए रखने की योजना।

आर्थिक क्षेत्र में

- भारत मे निवेश को बढ़ावा, आधुनिक उद्योगों एवं परिवहन के साधनों के विकास पर बल,

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

इन परिवर्तनों को भारतीयों की रोजगार एवं भारत के आधुनिकीकरण के तौर पर देखा जाने लगा।

स्वतंत्रता संघर्ष पर प्रभाव

- यह विद्रोह असफल तो रहा लेकिन इससे समकालीन भारतीयों ने कई सबक सीखा जैसे संघर्ष को संगठित होना आवश्यक है, विद्रोह या क्रान्ति की सफलता के लिए प्रगतिशील कार्यक्रम और योग्य नेतृत्व का भी होना आवश्यक है।
- 1857 के विद्रोह ने हिंसक संघर्ष की सीमाओं को भी उजागर किया और भविष्य में अंग्रेजों से किस प्रकार संघर्ष करना है इसको लेकर भी एक स्पष्ट दृष्टिकोण बनने लगा।
- 1857 के विद्रोह ने जिस प्रकार क्षेत्रीयता की सीमाओं को तोड़ा और परस्पर विरोधी वर्गों ने एकजुट होकर अंग्रेजों को चुनौती दी वह इस तथ्य का संकेत था कि किसी बड़े उद्देश्य के लिए भारतीय अपनी क्षेत्रीय पहचान तथा जातिगत एवं धार्मिक पहचान को पीछे छोड़कर एकजुट हो सकते हैं।
- 1857 के नायकों ने आने वाली पीढ़ी प्रेरित व प्रभावित किया।
- वी. डी. सावरकर के द्वारा 1857 के विद्रोह पर पुस्तक की रचना, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गदर आन्दोलन और आजाद हिन्द फौज में झाँसी रेजिमेंट का गठन, राष्ट्रीय आन्दोलन पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव का परिचायक है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

• स्वतंत्रता के पश्चात आज भी इन नायकों का प्रभाव हम अपने जीवन में देख सकते हैं।

1857 के विद्रोह का स्वरूप (प्रकृति / विशेषताएँ / आमिल क्षण)

नोट ⇒ 1857 के विद्रोह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार की सहयोग से एस. एन सेन ने 1857 नाम एक किताब लिखा।

• The war of Indian independence वी. डी. सावरकर ने लिखा।

• सैय्यद अहमद खाँ की किताब का नाम- सिपाही विद्रोह के कारण (The causes of the Indian Revolt)

प्र०- 1857 के विद्रोह के पश्चात ब्रिटिश नीतियों में परिवर्तनों को रेखांकित करें?

प्र०- 1857 के विद्रोह के पश्चात एक तरफ ब्रिटिश नीतियों मे सतर्कता दिखती है तो दूसरी तरफ रूढ़िवादी दृष्टिकोण थी?

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR